eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

भारत में कामकाजी महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति : समस्या व समाधान

ज्योती वर्मा[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, लाला महादेव प्रसाद वर्मा बालिका महाविद्यालय, लखनऊ

Received: 20 July 2025 Accepted & Reviewed: 25 July 2025, Published: 31 July 2025

Abstract

भारत में महिलाओं का इतिहास हमेशा से उतार–चढ़ाव से भरा रहा है। कुछ समय में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, लेकिन कई युगों में उन्हें आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। भारत में महिलाओं के लिए आजीविका का काम करना चुनौतीपूर्ण होता है। नारीवादी विचारकों के अनुसार, परिवार में स्त्री और पुरुष समान होते हैं, लेकिन कार्य विभाजन में लैंगिक असमानताएँ और सामाजिक बाधाएँ होती हैं। अलग–अलग हिस्सों में महिलाओं की भागीदारी दर भिन्न है। असंगठित क्षेत्रों में महिलाएं अधिक संख्या में काम कर रही हैं। भारत की श्रमशक्ति में महिलाएं एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, लेकिन वे पुरुषों की तुलना में रोजगार और गुणवत्ता के मामले में पीछे हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार, महिला श्रमिकों की संख्या कुल महिलाओं का 25.6 प्रतिशत है। अधिकांश महिला श्रमिक ग्रामीण क्षेत्रों में रहती हैं, जहां 87 प्रतिशत खेतिहर मजदूर हैं। शहरी क्षेत्रों में, महिलाएं घरेलू उद्योग, छोटे व्यवसाय और भवन निर्माण जैसे काम कर रही हैं। सरकार की नीतियों का मुख्य उद्देश्य महिला श्रमिकों की समस्याओं को दूर करना, वेतन और कार्य स्थिति में सुधार लाना, और उन्हें बेहतर रोजगार के अवसर प्रदान करना है।

मुख्य शब्द —समाज, पितृसत्तात्मक, महिलाओं, सामाजिक, आर्थिक, रोजगार, श्रमिक कामकाजी महिलाए, महिला सशक्तिकरण, समाज, कार्यस्थल।

Introduction

श्रम उत्पादन का आधार है और श्रमिक विकास को आगे बढ़ाने वाला महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है। श्रम मानव की प्राकृतिक प्रवृत्ति और आवश्यकता है, जो व्यक्ति को अपनी क्षमताओं से जीवन सुधारने का अवसर देता है और समाज की आर्थिक गतिविधियों का हिस्सा है। श्रम को एक निवेश माना गया है, जो आवश्यक वस्तुओं का निर्माण करता है। श्रमिक की अवधारणा मानव सभ्यता के शुरूआत से ही मौजूद रही है, लेकिन आधुनिक समय में इसका प्रयोग विशेष रूप से औद्योगिक क्रांति के बाद शुरू हुआ।[प]

कामकाजी शब्द का अर्थ काम करने वाले व्यक्ति या जीव से है, चाहे वह स्त्री हो, पुरुष हो या पशु। लेकिन समाज महिलाओं को कामकाजी तब मानता है जब वे बाहर जाकर काम करती हैं। घर पर रहने वाली महिलाओं को यह दर्जा नहीं मिलता, जबकि वे भी अपनी सेवाएं घर के लिए प्रदान करती हैं। इससे महिलाओं के दृष्टिकोण में यह धारणा बन गई है कि उनके द्वारा किए गए घरेलू काम का कोई महत्त्व नहीं है।

भारतीय समाज पितृसत्तात्मक है, जिसमें पुरुष का वर्चस्व और महिलाओं की अधीनता स्पष्ट हैं। परिवार में पुरुष का निर्णय अंतिम होता है, और उन्हें घर के बाहर के कार्यों की जिम्मेदारी दी जाती है। महिलाओं का समाजीकरण इस तरह से किया जाता है कि उनका अंतिम लक्ष्य विवाह और पति के घर में

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

रहना होता है। महिलाएं विभिन्न घरेलू कार्य करती हैं, जैसे खाना बनाना और बच्चों की देखभाल करना। निम्न जातियों में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण है, जबकि उच्च जातियों में यह दिखाई नहीं देता।

महंगाई के कारण महिलाएं अब सार्वजनिक सेवाओं और व्यवसायों में भी काम कर रही हैं। हालांकि, नारीवादी अध्ययन से पता चलता है कि परिवार में लैंगिक असमानता अभी भी मौजूद है। महिलाएं उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं और अच्छी नौकरियां कर रही हैं, लेकिन उनके खर्चों पर परिवार के पुरुष सदस्यों का नियंत्रण रहता है। भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में कुछ परिवर्तन हुआ है, फिर भी लैंगिक भेदभाव जारी है।

महिलाएं अक्सर अपने परिवारों में दबाव महसूस करती हैं और उन्हें यह अहसास कराया जाता है कि वे अनुपयोगी हैं। इस मानसिकता के कारण महिलाएं खुद को बेकार समझने लगती हैं।[पप] अगर कोई महिला बाहर जाकर काम करती है, तो उसे पितृसत्तात्मक समाज में एक एहसान का रूप में देखा जाता है। जबकि बाहरी काम करने वाली महिलाएं भी घर और बच्चों की देखभाल का काम करती हैं। समाज यह भूल जाता है कि दोनों – पुरुष और महिला समान रूप से व्यक्ति हैं, और दोनों को अपनी जिम्मेदारियों का सामना करना पड़ता है।

महिलाएं घर और कार्यस्थल पर तनाव में रहते हुए जीती हैं। उन्हें घर के काम और बच्चों की देखभाल के साथ–साथ बाहर काम करने का दवाब भी रहता है। इसके कारण वे मानसिक और शारीरिक बीमारियों का शिकार हो जाती हैं। घर और कार्यस्थल का तनाव एक–दूसरे पर प्रभाव डालता है, जिससे उनका जीवन प्रभावित होता है।

आजकल देश में लगभग एक करोड़ कामकाजी महिलाएं हैं, और उनका कार्यक्षेत्र कृषि और निर्माण से बढ़कर अन्य क्षेत्रों तक पहुंच चुका है। अब कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहां महिलाएं अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में सक्षम न हों। स्वतंत्र भारत के तीसरे और चौथे दशक में महिलाओं को आर्थिक क्षेत्रों में आरक्षण मिलने लगा और कई महिलाएं उद्यमिता के क्षेत्र में कदम रख रही हैं। इस बदलाव के बाद कुछ नई समस्याएं भी सामने आ रही हैं, लेकिन इसके बावजूद महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति मजबूत कर रही हैं।[पपप]

कामकाजी महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक दशाएँ–

19वीं शताब्दी की शुरुआत से, हिंदू समाज में महिलाओं के अधिकारों की बढ़ती मांग और उनके शोषण के खिलाफ आवाज उठाने का क्रम शुरू हुआ।[पअ] इस दिशा में महत्वपूर्ण बदलाव आया और महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। इससे उन्हें आत्मबल और एक नई जागरूकता मिली, जो बाद में उनकी प्रगति की नींव बनी। इसके फलस्वरूप कई महिला संगठनों, जैसे "महिलाओं की भारतीय समिति" और "भारतीय स्त्री मंडल," का गठन हुआ। 1950 में नए संविधान ने महिलाओं और पुरुषों को समान अधिकार दिए और सामाजिक समानता को मूल अधिकार माना। इसके चलते, महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ और वे लोकतांत्रिक समाज में अपनी पहचान बनाने लगीं।

महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है, और वे अब पुरुषों के साथ रोजगार और उत्पादन क्षेत्रों में काम कर रही हैं। महिलाओं के घर के बाहर काम करने की अवधारणा 1940 के

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

दशक से शुरू हुई, जब यह माना जाता था कि महिलाओं को घर में रहना चाहिए। सातवें दशक के मध्य में, शहरी मध्यवर्गीय महिलाओं ने कार्यालयों में काम करना शुरू किया। विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक मान्यताओं के कारण महिलाओं की कार्यक्षमता में भिन्नता है, खासकर असंगठित क्षेत्रों में उनकी संख्या अधिक है।

महिला श्रमिकों का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में है, और ग्रामीण महिला श्रमिकों में अधिकांश खेतिहर मजदूर हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार, लगभग 25.60 प्रतिशत महिलाएं श्रमिक हैं, जिनमें से अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत हैं।[अ] शहरी महिला श्रमिक घरेलू उद्योगों और छोटे व्यवसायों में काम कर रही हैं। संगठित और असंगठित क्षेत्रों में महिला श्रमिकों की संख्या 20012 में लगभग 49 लाख थी, जो कुल संगठित रोजगार का 17 प्रतिशत है।

महिलाएं कृषि और निर्माण क्षेत्र में महत्वपूर्ण काम कर रही हैं, लेकिन उन्हें पुरुषों की तुलना में कम वेतन मिलता है। निर्माण क्षेत्र में भी महिलाएं विभिन्न कार्यों में संलग्न हैं, लेकिन उनका श्रम अक्सर भेदभावपूर्ण तरीके से मूल्यांकन किया जाता है। इसके अलावा, असंगठित क्षेत्रों में काम करने वाली महिलाओं को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिनमें सेक्स वर्कर्स की स्थिति अत्यंत दयनीय होती है।

सरकारें असंगठित क्षेत्र की महिला श्रमिकों की स्थिति सुधारने के लिए कई कार्यक्रम चला रही हैं, जैसे आवास, बीमा, और स्वास्थ्य सेवाएं। स्वयंसेवी संस्थाएं भी महिलाओं के कल्याण के लिए काम कर रही हैं। उदाहरण के लिए, निर्माण कार्य में श्रमिक महिलाओं के बच्चों के लिए स्कूल और शिशु गृह बनाए जा रहे हैं। महिला श्रमिकों को विभिन्न कौशल पर प्रशिक्षण दिया जा रहा है ताकि वे बेहतर काम कर सकें या अपना व्यवसाय शुरू कर सकें।

स्वयं सहायता समूह योजना भी महिलाओं के लिए प्रभावी साबित हो रही है। इसके तहत, महिलाएं समूह बनाकर बैंकों से छोटे लोन ले सकती हैं और अपने छोटे कारोबार शुरू कर सकती हैं। हाल ही में, एक कानून भी पारित किया गया है, जो बड़ी कंपनियों को सामाजिक उद्देश्यों पर अपने मुनाफे का एक हिस्सा व्यय करने के लिए बाध्य करता है।

समग्रता में, भारतीय महिलाएं पुरुषों के समान आर्थिक क्षेत्रों में सक्रिय रूप से शामिल हो रही हैं। हर क्षेत्र में, जैसे बैंक, स्कूल, और अस्पतालों में, महिलाएं अपनी जिम्मेदारियां निभा रही हैं। पारंपरिक रूप से, घर की सारी जिम्मेदारी पुरुषों पर होती थी, लेकिन अब समय बदल चुका है। भारतीय महिलाएं हर उत्पादन क्षेत्र में योगदान देने में सक्षम हैं और अपनी पहचान बना रही हैं।

कामकाजी महिलाओं की समस्याएँ

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में बदलाव आया है। महिलाओं के प्रति परिवार और समाज की सोच बदल रही है। महिला सशक्तिकरण और रोजगार के कारण महिलाएं अपने सपनों को पूरा करने की कोशिश कर रही हैं, लेकिन इसके साथ ही उन्हें कई चुनौतियों का सामना भी करना पड़ रहा है। कामकाजी महिलाएं घरेलू मुद्दों और कार्यस्थल की समस्याओं से जूझ रही हैं।[अप]

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित और सुविधाजनक कार्यस्थल नहीं मिल पाता। यौन शोषण के खिलाफ कानून हैं, लेकिन महिलाओं को सुरक्षित माहौल नहीं मिलता। उन्हें अक्सर चयन और पदोन्नति के समय यौन शोषण का शिकार होना पड़ता है। नौकरी की जरूरत के कारण महिलाएं इन समस्याओं को सहन करती हैं और कानूनी मदद लेने से कतराती हैं। फिल्म उद्योग की हस्तियों ने 'मी टू' आंदोलन के दौरान यौन शोषण के मामले उजागर किए, लेकिन यह साबित करता है कि महिलाओं को अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

यदि महिलाओं को सुरक्षित और उचित अवसर मिले, तो वे हर क्षेत्र में अपनी क्षमता साबित कर सकती हैं। नियोक्ताओं को यौन उत्पीड़न के मामलों में सख्त नीति अपनानी चाहिए ताकि महिलाओं को काम जारी रखने में आत्मविश्वास रहे।

कामकाजी महिलाओं को और भी कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्हें यौन शोषण के अलावा पुरुषों की तुलना में कम वेतन और कम सम्मान मिलता है। लिंक्डइन अपच्युनिर्टी रिपोर्ट 2021 के अनुसार,अपप भारत में लगभग 37: महिलाओं को पुरुषों के बराबर वेतन नहीं मिलता। महिलाओं की समानता की बात तो होती है, लेकिन उन्हें पुरुषों की तरह सम्मान देने का कोई समाधान सामने नहीं आया है।

महिलाओं के प्रति सोच में बदलाव की जरूरत है, खासकर नियोक्ताओं और सहकर्मियों के बीच। महिलाओं की क्षमता और काम को कम आंकने की मानसिकता को समाप्त करना होगा। कार्य का मूल्यांकन परिणाम पर आधारित होना चाहिए, न कि लिंग के आधार पर।

महिलाओं को गर्भावस्था में मातृत्व अवकाश मिलने से कई कंपनियां उन्हें चुनने में हिचकते हैं, या अविवाहित होने की शर्त रखती हैं। यह नियोक्ता के लिए आर्थिक नुकसान का कारण बनता है, और इसलिए उच्च पदों पर महिलाओं की संख्या बहुत कम है।

कामकाजी महिलाओं को ऐसा रोजगार चाहिए जिसमें निश्चित कार्य समय और सुरक्षित वातावरण हो। इसलिए, महिलाएं अधिकतर शैक्षणिक क्षेत्र को प्राथमिकता देती हैं, जहाँ उन्हें संतोषजनक वेतन और काम की व्यवस्था मिलती है। हालांकि, वहां भी महिलाएं दोहरी भूमिका का सामना करती हैं। इस प्रकार, कई मुश्किलें बनी रहती हैं, लेकिन शैक्षणिक क्षेत्र में कुछ चुनौतियाँ कम हो सकती हैं।

सामाधान– परिवारिक समस्याओं के कारण, पुरुष और महिलाएं अकेले परिवारों में रहना अधिक पसंद करने लगे हैं। यह जरूरी है कि महिलाओं को पुरुषों के समान हर क्षेत्र में योगदान देने और भागीदारी का अधिकार मिले। कामकाजी महिलाओं के लिए कुछ बदलावों की आवश्यकता है। कामकाजी महिला के सामने एक भूमिका निभाने के लिए दूसरी को छोड़ना पड़े ऐसी परिस्थितियां नहीं आए इसके लिए हमें ही कुछ प्रयास करने होगें :–

- पहले, घर पर महिलाओं को समान अधिकार और अवसर दिए जाने चाहिए, और उन्हें काम न छोड़ने के लिए पारिवारिक समर्थन की आवश्यकता है।
- दूसरे, महिलाओं को सशक्त करने से देश की प्रगति में उनका योगदान बढ़ेगा, और परिवार को उनके काम में दबाव को कम करने में मदद करनी चाहिए।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

- महिलाओं को अपनी सेहत का ध्यान रखना भी जरूरी है, क्योंकि उनका स्वास्थ्य परिवार पर असर डालता है।
- महिलाओं को सुरक्षित और अनुकूल वातावरण की आवश्यकता है, क्योंकि सुरक्षा का मुद्दा बहुत महत्वपूर्ण बन गया है। सिर्फ कानूनी अधिकार देने से सुरक्षा की गारंटी नहीं मिलती, बल्कि इनका सख्ती से पालन भी जरूरी है।
- कामकाजी महिलाओं की आय को उनकी इच्छाओं के अनुसार खर्च करने का अधिकार मिलना चाहिए, क्योंकि यह उनके आत्म–सम्मान को बढ़ाता है।
- उन्हें समान वेतन भी मिलना चाहिए, ताकि वे पुरूषों के बराबर समझी जाएं।

महिला सशक्तिकरण में आर्थिक स्वतंत्रता का महत्वपूर्ण स्थान है। जब तक महिलाएं आर्थिक रूप से समृद्ध नहीं होंगी, उनके सशक्तिकरण के प्रयास अधूरे रहेंगे। समाज की सोच में बदलाव लाना आवश्यक है, ताकि महिलाएं अपनी पूरी क्षमता पहचान सकें और समाज निर्माण में अपनी भूमिका निभा सकें।

निष्कर्ष– भारतीय समाज में महिलाओं को कई भूमिकाओं से वंचित रखा गया है, जिससे वे विकास में योगदान नहीं कर पा रही हैं। उन्हें राजनीतिक अधिकार भी पुरुषों के समान नहीं मिलते, और पुरुष वर्ग उन्हें सहयोगी नहीं, बल्कि दासी समझता है। इसलिए लिंग भेद को समाप्त कर महिलाओं को समानता देने की आवश्यकता है। महिला शिक्षा को बढ़ावा देना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है, लेकिन इसके विकास की गति धीमी है। कई राज्य अभी भी महिला शिक्षा में पीछे हैं। सरकारी प्रयासों और महिला सम्मेलनों के बावजूद, महिला विकास में रुकावटों के कारणों की पहचान और उनके समाधान पर ध्यान देना आवश्यक है। महिला शिक्षा जनसंख्या वृद्धि को रोकने में भी मददगार हो सकती है। इससे महिलाओं की भागीदारी के बिना राष्ट्र का विकास संभव नहीं है।

इसके साथ ही, कामकाजी महिलाओं के साथ समान व्यवहार सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाना जरूरी है, क्योंकि महिलाओं से जुड़ी समस्याएं अक्सर असमानता पर आधारित होती हैं। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होता, तब तक विश्व कल्याण का कोई मार्ग नहीं है। परिवार और देश की उन्नति के लिए महिलाओं का सहयोग अनिवार्य है, खासकर कामकाजी महिलाओं को घर और काम के बीच संतुलन बनाए रखते हुए।

संदर्भ

1 Clark, Alice W. 1987. “Social Demography of Excess Female Mortality in India: New Directions.” Economic and Political Weekly 22 (17).(Review of Women Studies)..

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

2 कुमारी, संगीता (2020) कामकाजी महिलाएं समस्या एवं समाधान वर्तमान परिवेश के संदर्भ में, शोधार्थी, जे पी. विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार, भारत, इंटरनेशनल जरनल ऑफ़ अप्लाइड रिसर्च, आईएसएसएन प्रिंट : 2394– 7500, ऑनलाइन : 2394–5869।

3 नागर, आशा (2021) भारत में कामकाजी महिलाओं की समस्या में समाधान एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, सहायक आचार्य, राजकीय महाविद्यालय देवली, टोंक राजस्थान, भारत इनोवेशन दी रिसर्च कांसेप्ट आईएसएसएनः2456–5474।

4 शर्मा, प्रज्ञा : ''भारतीय समाज में नारी'', आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, 2001 पृ 139।

5 भारत की जनगणना (2001) के अनुसार।

6 वर्मा, अंजली, भारत में कार्यशील महिलाएं, ओमेना पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

7 लिंक्डइन अपच्युनिर्टी इन्डेक्स 2021।